नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

कार्यपालिका को प्रभावी बनाने की स्वागत योग्य कोशिश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सचिवों के साथ उच्च-स्तरीय बैठक में अधिकारियों को दिया गया यह संदेश कि वे केवल आज की समस्याओं और आंकड़ों तक सीमित न रहें, बल्कि आने वाले भारत की जरूरतों को ध्यान में रखकर नीतियां बनाएं, कार्यपालिका को अधिक प्रभावी और परिणामोन्मुख बनाने की दिशा में स्वागत योग्य कोशिश है. किसी भी देश की प्रगति केवल मौजूदा चुनौतियों का समाधान करने से नहीं होती, बल्कि भविष्य की आवश्यकताओं और संभावनाओं को समय रहते पहचानकर उसके लिए तैयारी करने से होती है.

प्रधानमंत्री ने सरकारी विभागों, विश्वविद्यालयों और युवाओं के बीच संवाद तथा सहयोग बढ़ाने पर विशेष जोर दिया है. यह पहल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी युवा आबादी, प्रतिभा और नवाचार की क्षमता है. नीति निर्माण यदि केवल सरकारी दफ्तरों तक सीमित रहेगा तो उसमें जमीनी अनुभव और नए विचारों का अभाव रह सकता है. विश्वविद्यालयों में हो रहे शोध, युवाओं की आकांक्षाएं और उद्योग की जरूरतें यदि सरकारी सोच से जुड़ें तो नीतियों को अधिक व्यावहारिक, प्रभावी और भविष्य के अनुरूप बनाया जा सकता है. कोविड महामारी और पश्चिम एशिया के संकट का अनुभव यह साबित कर चुका है कि कठिन परिस्थितियों में विभागीय सीमाओं से ऊपर उठकर सामूहिक प्रयास करना कितना जरूरी है. प्रधानमंत्री ने ठीक ही संकेत दिया है कि अलग-अलग रहकर काम करना केवल प्रशासनिक समस्या नहीं, बल्कि सोच की समस्या भी है.

आज शासन के सामने ऐसी अनेक चुनौतियां हैं, जिनका समाधान किसी एक मंत्रालय या विभाग के स्तर पर संभव नहीं है. इसलिए विभिन्न विभागों के बीच बेहतर समन्वय और साझा जिम्मेदारी समय की आवश्यकता है. कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा के प्रभावी इस्तेमाल पर प्रधानमंत्री का जोर भी भविष्य की शासन व्यवस्था के लिहाज से महत्वपूर्ण है. डेटा अब केवल आंकड़ों का संग्रह नहीं, बल्कि नीति निर्माण की आधारभूत पूंजी बन चुका है. स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, रक्षा, परिवहन और शहरी विकास जैसे क्षेत्रों में प्रमाण आधारित निर्णय लेने से सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता बढ़ाई जा सकती है. इसी तरह रक्षा क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार, समुद्री क्षेत्र के विकास, पोत निर्माण, बंदरगाह आधारित विकास और निर्यातोन्मुख विनिर्माण को एक-दूसरे से जोड़ने की सोच भारत को आर्थिक और रणनीतिक रूप से मजबूत कर सकती है.

भारत के पास विशाल समुद्री क्षेत्र और बड़ा बाजार है. ऐसे में बंदरगाहों को केवल माल ढुलाई के केंद्र के रूप में नहीं, बल्कि औद्योगिक गतिविधियों, निवेश और रोजगार के केंद्र के रूप में विकसित करना दूरगामी दृष्टि का परिचायक है. प्रधानमंत्री का यह संदेश प्रशासनिक तंत्र के लिए भी महत्वपूर्ण है कि वरिष्ठ अधिकारी कनिष्ठ सहयोगियों के साथ बेहतर व्यक्तिगत संवाद और मजबूत नेटवर्क विकसित करें.

दरअसल, भारत आज जिस परिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है, उसमें शासन को केवल समस्याओं का समाधान करने वाली व्यवस्था नहीं, बल्कि भविष्य का निर्माण करने वाली व्यवस्था बनना होगा. आज लिए गए निर्णय ही कल के भारत की तस्वीर तय करेंगे. इसलिए सरकार और प्रशासन के सामने सबसे बड़ी चुनौती वर्तमान की जरूरतों को पूरा करने के साथ भविष्य की पीढ़ियों के लिए मजबूत, आत्मनिर्भर और विकसित भारत की नींव रखना है. प्रधानमंत्री का 'आज नहीं, कल के भारत की सोचिए' वाला मंत्र इसी दूरदृष्टि और जवाबदेह कार्यपालिका की आवश्यकता को रेखांकित करता है.

बढ़ती कीमतें और भारतीय जन-मानस

संजीव ठाकुर

मानवीय अहंकार के परिणाम स्वरूप अमेरिका-ईरान-इजरायल और यूक्रेन रूस युद्ध के चलते पेट्रोलियम पदार्थों के दाम लगभग विश्व के हर देश में बढ़ गए हैं. इसी परिपेक्ष में भारत में भी बढ़ते पेट्रोल डीजल के दामों के करण भारतीय मध्यम वर्गीय अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक संरचना बृहद रूप में प्रभावित हुई है. पेट्रोल में एथेनॉल मिलने के कारण गन्ने की कीमतों में इजाफा हुआ है और गन्ने की कीमतों में मिर्जापुर होने से शक्कर प्रति किलो 25 से 30 रुपए महंगी हो गईद्य और महंगाई ने मध्यमवर्गीय परिवार के बजट की खबर तोड़कर रख दिए एक बार महंगाई बढ़ती है तो वापस काम नहीं होती हैद्य अमेरिका-ईरान तनाव, रूस-यूक्रेन युद्ध तथा मध्य-पूर्व में इजरायल से जुड़े संघर्षों ने वैश्विक ऊर्जा बाजार को अस्थिर कर दिया है.

> आज आवश्यकता इस बात की है कि वैश्विक स्तर पर युद्ध और संघर्ष की राजनीति के स्थान पर संवाद और सहयोग को बढ़ावा दिया जाए. साथ ही भारत को वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों, सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था और ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में और अधिक प्रयास करने होंगे. सौर ऊर्जा, जैव ईंधन और विद्युत वाहनों को बढ़ावा देकर पेट्रोलियम पर निर्भरता कम की जा सकती है. बढ़ती पेट्रोलियम कीमतें केवल आर्थिक समस्या नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक स्थिरता और जीवन की गुणवत्ता से भी जुड़ी हुई हैं. युद्धों और वैश्विक तनावों की कीमत अंततः आम नागरिक चुकाता है. इसलिए विश्व शांति, ऊर्जा सुरक्षा और संतुलित आर्थिक नीतियां ही मध्यम वर्ग को राहत प्रदान कर सकती हैं. जब तक पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों पर नियंत्रण नहीं होगा, तब तक महंगाई का दबाव भारतीय मध्यम वर्ग की आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करता रहेगा.

पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में हुई वृद्धि ने लगभग प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है. भारत भी इससे अछूता नहीं रहा. पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस की बढ़ती कीमतों ने विशेष रूप से भारतीय मध्यम वर्ग की आर्थिक और सामाजिक संरचना को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है.

भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बड़े पैमाने पर क'चे तेल का आयात करता है. अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में वृद्धि का सीधा प्रभाव घरेलू बाजार पर पड़ता है. पेट्रोल और डीजल केवल वाहन चलाने के साधन नहीं हैं, बल्कि वे संपूर्ण आर्थिक गतिविधियों की रीढ़ हैं. परिवहन, कृषि, उद्योग, व्यापार और सेवा क्षेत्र लगभग सभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इन पर निर्भर हैं. डीजल की कीमतों में वृद्धि का सबसे अधिक प्रभाव परिवहन क्षेत्र पर पड़ता है. देश में अधिकांश माल ढुलाई ट्रकों के माध्यम से होती है. जब डीजल महंगा होता है, तो परिवहन लागत बढ़ जाती है. इसका परिणाम यह होता है कि खाद्यान्न, फल-सब्जियां, दूध, दालें, निर्माण सामग्री और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की कीमतें स्वतः बढ़ने लगती हैं. व्यापारी अतिरिक्त लागत का भार अंततः उपभोक्ताओं पर डाल देते हैं. इस प्रकार महंगाई का एक ऐसा चक्र प्रारंभ हो जाता है, जिससे सामान्य नागरिक बच नहीं पाता.

भारतीय मध्यम वर्ग पहले से ही शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और रोजगार संबंधी चुनौतियों से जूझ रहा है. पेट्रोलियम उत्पादों की बढ़ती कीमतों ने उसकी मासिक आय और व्यय के संतुलन को और बिगाड़ दिया है. जिन परिवारों के पास निजी वाहन हैं, उनके लिए कार्यालय, विद्यालय और अन्य आवश्यक यात्राओं का खर्च बढ़ गया है. वहीं रसोई गैस की कीमतों में वृद्धि ने घरेलू बजट को प्रभावित किया है. परिणामस्वरूप परिवारों को अपनी आवश्यकताओं और इ'छाओं के बीच समझौता करना पड़ रहा है. महंगाई का सामाजिक प्रभाव भी कम गंभीर नहीं है. जब आय स्थिर हो और खर्च लगातार बढ़ता जाए, तो परिवारों में तनाव बढ़ने लगता है. आर्थिक दबाव पारिवारिक संबंधों, सामाजिक सहभागिता और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है. मध्यम वर्ग, जो समाज की स्थिरता और विकास का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है, स्वयं असुरक्षा और भविष्य की चिंताओं से घिर जाता है.

कृषि क्षेत्र भी इससे प्रभावित हुआ है. डीजल से चलने वाले पंप, ट्रैक्टर और कृषि यंत्रों की लागत बढ़ने से खेती महंगी हो गई है. उत्पादन लागत बढ़ने पर किसान अपनी उपज का उचित मूल्य चाहते हैं, जिससे बाजार में खाद्य पदार्थों की कीमतों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है. इस प्रकार महंगाई का प्रभाव खेत से लेकर थाली तक दिखाई देता है. अर्थशास्त्री लंबे समय से कहते रहे हैं कि ऊर्जा की कीमतें किसी भी अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण संकेतक होती हैं.

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह ने अनेक अवसरों पर ऊर्जा सुरक्षा को आर्थिक स्थिरता के लिए आवश्यक बताया था. वहीं अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन ने भी विकास को केवल आय वृद्धि नहीं बल्कि जीवन-स्तर की गुणवत्ता से जोड़कर देखा है. यदि बढ़ती महंगाई लोगों की बुनियादी आवश्यकताओं को प्रभावित करती है, तो विकास का वास्तविक लाभ समाज तक नहीं पहुंच पाता.

मध्यप्रदेश की राजनीति

योजनाओं की ढाल और जनाधार की जंग

संजीव शर्मा

मध्यप्रदेश की राजनीति इस समय केवल सरकार बनाम विपक्ष के पारंपरिक संघर्ष तक सीमित नहीं है. सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों अपने-अपने तरीके से अगले बड़े राजनीतिक मुकाबले की जमीन तैयार कर रहे हैं. मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की ओर से मंत्रियों को लगातार जनता के बीच जाने और जमीन पर सक्रिय रहने की हिदायत, महिला-केंद्रित योजनाओं की निरंतरता, भाजपा के राष्ट्रीय संगठन में मध्यप्रदेश के नेताओं की जिम्मेदारियां और कांग्रेस द्वारा लगातार भ्रष्टाचार, शिक्षा तथा जनसरोकारों पर आधारित मुद्दे उठाते रहना एक साथ देखें तो नई रणनीतिक दिशा दिखाई देती है.

सबसे महत्वपूर्ण संकेत सरकार की कार्यशैली से मिल रहा है. मंगलवार को मंत्रिमंडल की बैठक में मुख्यमंत्री को मंत्रियों से यह दोहराना पड़ रहा है कि वे जनता के बीच जाएं और सीधे संवाद करें. यह केवल प्रशासनिक निर्देश नहीं माना जा सकता. इसके पीछे राजनीतिक चिंता भी है. सत्ता में आने के बाद सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि शासन की उपलब्धियां और योजनाएं आम लोगों के अनुभव का हिस्सा बनें. यदि मंत्री और विधायक जनता से नियमित संपर्क में नहीं रहते तो सरकार और समाज के बीच दूरी पैदा हो सकती है.

मध्यप्रदेश जैसे बड़े और भौगोलिक रूप से विविध राज्य में यह चुनौती और गंभीर है. भोपाल में बैठकर योजनाओं की समीक्षा और जिलों में जनता की वास्तविक समस्याओं के बीच काफी अंतर हो सकता है. इसलिए मुख्यमंत्री का मंत्रियों को जमीन पर उतरने के लिए कहना सरकार के भीतर एक तरह के राजनीतिक फीडबैक सिस्टम को मजबूत करने की कोशिश भी है. इससे लगता है,सरकार अब केवल योजनाओं के क्रियान्वयन की रिपोर्ट पर निर्भर रहने के बजाय जनता की प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया को अधिक महत्व देना चाहती है.

इसी संदर्भ में लाड़ली बहना योजना को अगले पांच वर्षों तक जारी रखने का निर्णय बेहद महत्वपूर्ण है. यह योजना अब मध्यप्रदेश की राजनीति में केवल महिला कल्याण कार्यक्रम नहीं रह गई है. यह सरकार और महिला मतदाताओं के बीच एक प्रत्यक्ष राजनीतिक संबंध का माध्यम बन चुकी है. योजना की निरंतरता का फैसला इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भाजपा की चुनावी राजनीति में लाभार्थी वर्ग एक स्थायी राजनीतिक आधार के रूप में उभरा है. योजना के विस्तार के तत्काल बाद मुख्यमंत्री द्वारा मैहर से 39 वीं किस्त जारी करना भी प्रतीकात्मक रूप से महत्वपूर्ण है. इससे सरकार ने एक साथ दो संदेश दिए पहला, महिला हितैषी योजनाओं को दीर्घकालिक आधार दिया जा रहा है और दूसरा, लाभार्थियों तक आर्थिक सहायता की प्रक्रिया लगातार जारी रहेगी. भाजपा की राजनीति में अब कल्याणकारी योजनाओं और संगठनात्मक संपर्क का संयोजन महत्वपूर्ण हो गया है. सरकार योजना देती है, जबकि संगठन और जनप्रतिनिधियों के माध्यम से उसका राजनीतिक संवाद जनता तक पहुंचता है. यहीं से भाजपा के सामने असली चुनौती भी सामने आती है. किसी भी सरकार के लिए लोकप्रिय योजना शुरू करना अपेक्षाकृत आसान है, लेकिन लंबे समय तक उसके प्रभाव को बनाए रखना कठिन है. लाभार्थी को सहायता मिलना जरूरी है, लेकिन साथ ही रोजगार, महंगाई, स्थानीय विकास, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासनिक जवाबदेही जैसे मुद्दे भी जनता के राजनीतिक निर्णय को प्रभावित करते हैं. इसलिए भाजपा को योजनाओं के साथ-साथ शासन की समग्र छवि पर भी लगातार काम करना होगा.

> कुल मिलाकर मध्यप्रदेश की राजनीति में इस समय सत्ता की स्थिरता के साथ राजनीतिक सतर्कता भी दिखाई दे रही है. भाजपा सरकार कल्याणकारी योजनाओं, संगठनात्मक पुनर्संरचना, जनसंपर्क और वैचारिक मुद्दों के जरिए अपना आधार मजबूत करने की कोशिश कर रही है. कांग्रेस दूसरी ओर भ्रष्टाचार, शिक्षा और जनसमस्याओं को आधार बनाकर सरकार के खिलाफ राजनीतिक माहौल बनाने की तैयारी में है. इस पूरी तस्वीर का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि दोनों दल अब केवल चुनाव जीतने की तैयारी नहीं कर रहे, बल्कि मतदाता के साथ लंबे समय का राजनीतिक संबंध बनाने की कोशिश में हैं. भाजपा के लिए लाड़ली बहना और जनसंपर्क इसका हिस्सा हैं, तो कांग्रेस के लिए जनसरोकार और सरकार विरोधी मुद्दों को संगठन तक ले जाना. दतिया का परिणाम इस बड़े संघर्ष में एक संकेत जरूर है, लेकिन निर्णायक तस्वीर इससे कहीं आगे बननी है. मध्यप्रदेश की अगली राजनीतिक लड़ाई में योजनाओं से ज्यादा महत्वपूर्ण होगा कि कौन दल जनता के बीच लगातार मौजूद रहता है, कौन उसकी समस्याओं को राजनीतिक मुद्दे में बदलता है और कौन अपने संगठन को उस संदेश को वोट में बदलने के लिए तैयार कर पाता है.

(लेखक नवभारत डिजिटल के संपादक हैं)

हमेशा से चर्चा में रहा धनुष-बाण

न्याय व्यवस्था में अपील, दलील और वकील की भूमिका महत्व रखती है. दोनों पक्षों के तर्कों और मामले के तथ्यों पर विचार कर न्यायाधीश न्याय प्रदान करते हैं. फिलहाल मुद्दा है धनुष-बाण किसका ? शिंदे या उद्धव का ? इसे लेकर उद्धव के वकील कपिल सिब्बल बड़े ही सबल तर्क देते रहे हैं. सिब्बल ने तत्काल प्रभाव से शिवसेना के चुनावचिन्ह धनुष-बाण को फ्रीज करने की मांग की है. हमारी संस्कृति में हमेशा से धनुष-बाण का महत्व रहा है. अर्जुन महान धनुर्धर थे, जो वृक्ष पर बैठी चिड़िया की आंख पर निशाना लगा सकते थे. उन्होंने द्रौपदी के स्वयंवर में तेल के कुंड में ऊपर घूमती मछली की छाया देखकर उसका लक्ष्यवेध किया था. उनके धनुष का नाम गांडीव था. एकलव्य पिछड़े वर्ग का कैंडिडेट था. उसे द्रोणाचार्य ने अपनी एकेडमी में एडमिशन नहीं दिया, तो उसने उनकी मूर्ति बनाकर उसके सामने अभ्यास किया और इतना निपुण हो गया कि उसने भौंकते कुत्ते को नुकसान पहुंचाए बगैर अपने बाणों से उसका मुंह तीरों से भर दिया. द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अंगूठा गुरुदक्षिणा में मांग लिया था ताकि वह अर्जुन की बराबरी न कर सके. यह द्रोणाचार्य का जजमेंट था. उन्होंने एक तरह से एकलव्य का धनुष बाण फ्रीज कर दिया था. राजा जनक के पास शिव का दिया हुआ भारी धनुष था, जिसे सीता आसानी से हटाकर मंदिर की साफसफाई कर लेती थीं. सीता स्वयंवर के समय उस धनुष को उठाकर प्रत्यंचा (डोरी) चढ़ाने की शर्त थी. कोई भी राजा यहां तक कि रावण भी उस धनुष को उठाना तो दूर, हिला भी नहीं पाया. राम ने पलक झपकते उस धनुष को उठाया और तोड़ दिया. विष्णु के छठे अवतार परशुराम क्रोधित होकर वहां आए और पूछा कि मेरे गुरु शिव का धनुष किसने तोड़ा ? उनकी लक्ष्मण से तीखी बहस हुई. परशुराम के पास शिव का दूसरा धनुष था. उन्होंने राम को उस पर चाप चढ़ाने की चुनौती दी. वह धनुष अपने आप राम के पास चला गया. राम ने उसी धनुष से बाण छोड़कर खर, दूषण, त्रिशरा, मारीच, बाली और रावण का वध किया था. धनुष-बाण हमेशा से चर्चा में रहा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

दुनिया में कौन पैदा हुआ कब समझ लो जेन जी का मतलब

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें ठीक से समझाइए कि जेन जी का मतलब क्या होता है? इस शब्द का अर्थ सामान्य जनता कैसे समझे?' हमने कहा, 'समझका निरंतर विस्तार करना पड़ता है. जेन जी का अर्थ है, वह पीढ़ी जो 1997 से 2012 के बीच पैदा हुई. अमेरिकन इंग्लिश में अंग्रेजी के 2 अक्षर को 'जी' कहा जाता है, इसलिए जेन जी शब्द चल पड़ा है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इतनी लंबी बात करने की क्या जरूरत है? सीधे कहिए न कि यह आजकल के छोकरे-छोकरियों की पीढ़ी है. इसे मराठी में पोट्टे-पाट्टे कह सकते हैं.' हमने कहा, 'यही पीढ़ी हमारे भारत का उज्वल भविष्य है. सोशल मीडिया इसका औजार है. जेन जी की भाषा अलग है. यह पीढ़ी बेखौफ है. जेन जी कभी किसी के सामने झुककर हांजी हांजी नहीं करती. उसके अपने स्वतंत्र विचार हैं. इस समय सारे भारत में जेन जी का जलवा है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह नई उमर की नई फसल है. उमर शब्द से हमें फिल्मी गीत याद आ रहे हैं जैसे कि- तुम्हें और क्या दूं मैं दिल के सिवाय, तुमको हमारी उमर लग जाए! बाली उमरिया भजन करूं कैसे ! मेरी उमर के नौजवानो, दिल ना लगाना ओ दिवानो! घूंघट नहीं खोलूंगी सैंया तोरे आगे, उमर मोरी बाली 1997 2012 त्श्वह 'शरम मोहे लागे!' हमने कहा, 'उमर किसी व्यक्ति का नाम भी होता है. जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला हैं. अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर उनसे मिलने श्रीनगर गए. गोर ने बयान दिया कि जम्मू-कश्मीर भारत का अहम हिस्सा है. यह बयान सुनकर पाकिस्तान तिलमिला गया.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, उम्र को लेकर शायरी भी है. अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने कहा था- उम्र-ए-दराज मांग के लाए थे चार दिन, दो आरजू में कट गए, दो इंतजार में! अब आप हमें उम्र के हिसाब से पीढ़ियों या जनरेशन के नाम बताइए.' हमने कहा, 'ध्यान से सुनिए, 1928 से पहले जन्म लेने वालों को ग्रेटेस्ट जनरेशन कहते हैं. 99 वर्षीय लालकृष्ण आडवाणी इसी पीढ़ी के हैं. साइलेंट जनरेशन का जन्म 1928 से 1945 के बीच हुआ. 1946 से 1964 के बीच पैदा होने वाली पीढ़ी बेबी बूमर्स कहलाती है. जेन एक्स वह हैं जिनका जन्म 1965 से 1980 के बीच हुआ था. मिलेनियल्स या जेन वाय उन्हें कहते हैं जो 1981 से 1996 के बीच पैदा हुए. जेन अल्फा वह हैं, जो 2010 से 2024 के बीच जन्में. इसके बाद पैदा होने वाले जेन बीटा कहलाएंगे.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12356

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	■	4	5	6
7		■	8				
9		10		■	11		■
■	12		■	13	■	14	15
16	■	17	18		19	■	
20	21			■	22		
23		■	24	25		■	
26			■		■	27	

बाएं से दाएं

1. कटे हुए सिरों की माला (सं.) 4. जिस पर शासन किया जाए, दंडित, प्रजा (सं.) 7. ठहरने का स्थान, खेमा, ठिकान, तंबू 8. मध्य, बीच, मध्य में, बीच में 9. दौड़ना, लपकना, उछलना 11. वह गुण जिससे कोई वस्तु चिपकती हो, गोंद 12. नृत्य 14. रोटी सेंकने का छिछला गोल बर्तन 17. काट खाने वाला 20. शोरगुल, लड़ाई-झगड़ा, विवाद 22. चावल पक जाने के बाद उसमें का मांड़ या बचा हुआ पानी निकालना 23. बड़ी नदी (सं.) 24. नृत्य करना, प्रसन्नतापूर्वक उछलना-कूदना 26. चिंतन, भलीभांति समझकर किया जाने वाला अध्ययन या विचार 27. डर, खौफ

ऊपर से नीचे

1. खेत के चारों ओर की मेड़, किसी प्रकार का बांधा हुआ पुश्ता 2. जिसके देखने से डर लगे, भयानक 3. ढोने के लिए वस्तुओं को भरना, किसी पर बोझ रखना 4. सम्मिलित 5. राजनीति 6. देह, काया, शरीर 10. बकझक, वाग्युद्ध 13. भिक्षा, खैरात 15. वह स्थान जहां लोगों के पढ़ने के लिए समाचार पत्र-पुस्तकें आदि रहती हैं 16. ओस 18. गुल्फ, एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गांठ 19. मापना, किसी स्थान या वस्तु की लंबाई-चौड़ाई निश्चित करना 21. कामदेव (सं.) 25. चारों ओर से बहने वाली हवा

Solution 12355

खा	न	का	ह	■	■	ई	ख
ना	■	■	न	व	कु	मा	री
ब	ल	■	नी	र	■	न	द
दो	स्त	■	य	दा	क	दा	■
श	■	इ	■	न	फ	र	त
■	दा	मा	द	■	न	■	क
का	य	र	■	दू	■	त	ली
बा	रा	त	■	त	वा	य	फ

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारम्भ में मित्रों का सहयोग मिलेगा. वाहन सुख प्राप्त होगा. शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. वर्ष के मध्य में स्थान परिवर्तन का योग है. व्यवसाय में वृद्धि होगी. वर्ष के अन्त में पूर्व निर्धारित कार्यों में रूकावटें आयेंगी. व्यर्थ वाद विवाद एवं मानसिक अशांति रहेगी. योजनायें रूक सकती हैं.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मित्रों का सहयोग मिलेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय मे वृद्धि होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को रूकावटों के कारण योजनायें अपूर्ण रह सकती हैं. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यों में रूकावटें आयेंगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्थान परिवर्तन का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा करना पड़ेगी. मकर और कुम्भ राशि के व्यक्तियों को मान-सम्मान प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर सुशील मिलनसार और न्यायप्रिय होगा, भूमि भवन मकान आदि का सुख रहेगा. नौकरी आदि में सफलता मिलेगी. माता का भक्त होगा. जन्म स्थान से दूर भाग्योदय होगा.

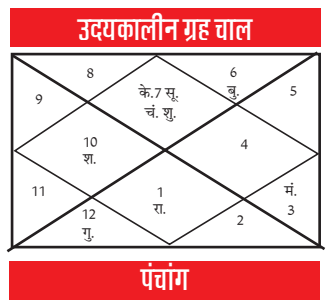

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 31 संवत् 2083 श्रावण शुक्ल दशमीं शनिवासरे रात 1/46, ज्येष्ठा नक्षत्रे दिन 4/3, वैधृति योगे दिन 7/43, तैतिल करणे सू.उ. 5/37, सू.अ. 6/23, चन्द्रचार वृश्चिक दिन 4/3 से धनु, शु.रा. 8, 10, 11, 2, 3, 6 अ.रा. 9, 12, 1, 4, 5, 7 शुभांक- 0, 3, 7.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल दशमीं को ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीपल खांड़ गेहूँ, सूत, जौ, चना, तिल, तेल, में तेजी होगी. वायदा विचार आज शेयर बाजारों के रूख पर व्यापार करना लाभदायक रहेगा. भाग्यांक 2559 है.

मेष- कामकाज निपटाने के लिये किसी के सहयोग की जरूरत होगी. लाभ होने का योग है. यात्रा आदि का योग प्रबल रहेगा. प्रयत्नों में सफलता मिलेगी.

वृषभ- दूसरों को अपने व्यक्तिगत मामलों में दखल का अवसर न दें. परिश्रम की अधिकता बनी रहेगी. सुखद अनुभवों की प्राप्ति होगी.

मिथुन- भौतिक सुख सुविधा में बढ़ोत्तरी संभव है. कार्य क्षेत्र में आपका प्रभाव व बर्चस्व बढ़ेगा. स्त्री जाति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी. आर्थिक कार्यो में सुधार होगा.

कर्क- कुछ लोग आपसे नजदीकी का लाभ उठाने की कोशिश कर सकते हैं. व्यवसायिक क्षेत्र में सुधार होगा. अतिथि वृषभमन का योग है. संयम से कार्य करें.

सिंह- रूकी योजनाओं में गति देने में सफलता मिलेगी. पारिवारिक परेशानी दूर होगी. हितकारी लाभदायक योजनायें बनेंगी. उत्साह बना रहेगा.

कन्या- कैरियर में आ रही बाधा दूरी होंगी. कम लाभ में भी संतोष रहेगा. अनपेक्षित आगन्तुकों से धन व्यय होगा.उचित मार्गदर्शन मिलेंगे. मित्र आपकी मदद करेंगे.

तुला- स्वास्थ्य में उतार चढाव से सेहत बिगड़ सकती है. मामूली बात पर मित्रों से कहासुनी होगी. मानसिक प्रसन्नता होगी. थोडे लाभ में भी संतोष रहेगा.

वृश्चिक- आपके सहज स्वाभाव का लोग गलत फायदा उठाने का प्रयास कर सकते हैं. निकट संबंधियों का सहयोग रहेगा.मनचाही सफलता मिलेगी. कामकाज पूरा होगा.

धनु- आपका कड़ा व्यवहार घर में कलह का कारण बन सकता है. विद्या पक्ष में उन्नति होगी. कामकाजी महिलाओं को अच्छी सफलता का योग है.

मकर- आकस्मिक विस्तार की संभावना को बल मिलेगा. कामकाज की देरी से खिन्नता होगी. कोर्ट कचहरी के कार्यो में यथेष्ठ सफलता मिलेगी.

कुम्भ- आप किसी बात को लेकर भयभीत हो सकते हैं. मित्रों का साथ आगे बढ़ने की हिम्मत देगा. परिश्रम अधिक रहेगा. किसी विशिष्ट व्यक्ति से सहयोग मिलेगा.

मीन- मित्रों से किया गया वादा निभाना मुश्किल होगा, नए काम की तलाश में सफलता मिलेगी. कामकाज के प्रति उत्साह बना रहेगा. व्ययभार की अधिकता रहेगी.

SUDOKU 7488

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7487

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7